Museum Education

संग्रहालयीय शिक्षा

मनुष्य सर्वश्रेष्ठ बौद्धिक एवं सामाजिक प्राणी है। कालान्तर से मनुष्य द्वारा ही शनैः-शनैः सभ्यता एवं संस्कृति का विकास किया गया है। मनुष्य की इस अभूतपूर्व विकास की प्रक्रिया में शिक्षा का सर्वाधिक योगदान रहा है। शिक्षा के ही योगदान से मनुष्य श्रेष्ठ बौद्धिक एवं सामाजिक प्राणी के रूप में विकसित होकर मानव सभ्यता और संस्कृति को बढ़ाता है। शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तिगत व सामाजिक जीवन को सुन्दर बनाती है। प्रत्येक व्यक्ति कुछ पाशविक प्रवृत्तियाँ लेकर इस संसार में आता है। पाशविक प्रवृत्तियों का शोधन एवं मार्गान्तीकरण यदि न हो तो मनुष्य व पशु में कोई अन्तर नहीं रह जाता। पाशविक प्रवृत्तियों का शोधन और मार्गान्तीकरण शिक्षा के द्वारा ही सम्भव होता है। अर्थात् पशुता से मनुष्यता की ओर ले जाने का श्रेय शिक्षा को ही जाता है। शिक्षा के अभाव में मानव प्रगति अवरुद्ध हो जाती है और वह पशु के समान जीवन व्यतीत करता है। मानव जीवन के लिए शिक्षा के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए मैकाइवर ने लिखा है—"शिक्षा वह माध्यम होती है जिससे मनुष्य की वैयक्तिकता का पूर्ण विकास होता है।"

शिक्षा प्रशिक्षण का भी कार्य करती है। इस तरह की शिक्षा का एक उदाहरण संग्रहालयी शिक्षा है। संग्रहालय प्राकृतिक तत्त्वों और मानव क्रियाओं का संग्रह संस्थान होता है जिसका उपयोग ज्ञान के संवर्द्धन और विकास तथा जनता के सांस्कृतिक और बौद्धिक विकास के लिए किया जाता है जो कि शिक्षण कार्य के उद्देश्य को पूरा करता है। संग्रहालय में संग्रहित व प्रदर्शित कला वस्तुओं या विभिन्न प्रदर्शित वस्तुएँ दर्शकों के लिए रखी जाती हैं ताकि दर्शक या जन साधारण वस्तुओं से कुछ सीखे, कुछ स्वीकार करे या कुछ जानकारी प्राप्त करें। यही सीखना या जानकारी प्राप्त करना तो शिक्षा है, चाहे वह शिक्षक के द्वारा की जाय या स्वतः प्राप्त की जाय। यह शिक्षा मनोरंजन के साथ-साथ दी जाती है। चाहे संग्रहालय अति प्राचीन

हो जैसे—भारतीय संग्रहालय कलकत्ता या नए संग्रहालय हो, चाहे वे राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली हों या कोई भी विशिष्ट संग्रहालय विश्वविद्यालय संग्रहालय क्यों न हो, सभी का एक विशेष उद्देश्य है—मनोरंजन व शिक्षा। संग्रहालय में सबसे दुर्लभ, सबसे सुन्दर व सबसे महत्त्वपूर्ण प्राचीन कलावस्तुओं को देखने, समझने व पढ़ने की पूरी-पूरी छूट होती है। इस शिक्षा में निपुणता ऐतिहासिक सम्बन्ध महत्त्वपूर्ण खोज मानव संस्कृति का विकास सभी पहलुओं पर विचार किया जा सकता है। संग्रह के साथ-साथ दर्शकों की शिक्षा ही एक महत्त्वपूर्ण क्रिया विधि है। संग्रहालय शिक्षा प्रदान करने के अपने उद्देश्य में एक विशिष्ट भूमिका निर्वाह करता है। यह आवश्यक नहीं है कि शिक्षा मात्र पुस्तकों के माध्यम से दी जाय। संग्रहालय में ग्रामीण, अनपढ़, व्यक्ति भी जाते हैं जो पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त करने में अक्षम होते हैं उन्हें मूक कलाकृतियों, पेंटिंग्स के माध्यम से ज्ञान प्राप्त होता है।

संग्रहालयीय शिक्षा का स्वरूप

संग्रहालय वह अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र है जहाँ बिना पुस्तक, बिना शिक्षक, बिना पाठ्यक्रम व बिना वर्गभेद के अभिव्यक्ति व शिक्षा प्रस्तुत की जाती है। यहाँ दर्शक स्वयं प्रायोगिक रूप से महसूस करता है, अपने निजी अनुभव, स्पर्श व साक्षात वस्तुओं से वह सुखद अनुभव प्राप्त करता है। संग्रहालय अनौपचारिक व औपचारिक शिक्षा दोनों प्रदान करता है। संग्रहालय से विद्यालय, विद्यालय से संग्रहालय, संग्रहालय ही विद्यालय तीनों एक-दूसरे के पूरक हैं। यह मात्र विद्यालय भवन तक ही सीमित नहीं है जिसमें घण्टी बजाकर, बच्चों को या विद्यार्थीगण को बुलाया जाय। बल्कि किसी भी समय किसी भी प्रकार से विद्यार्थी को जानकारी प्राप्त हो। यहाँ विद्यार्थी किसी विशेष वर्ग के नहीं हैं। बच्चों से वृद्ध तक, युवा से बच्चों तक, महिला-अनपढ़ से पढ़ी-लिखी वर्ग तक, विद्वानों से एक साधारण वर्ग के लिए बिना किसी निर्धारित पाठ्य-क्रम के संग्रहालय अपने कर्तव्य का निर्वाह करता है। अतः संग्रहालय का एकमात्र उद्देश्य है—मनोरंजन व शिक्षा प्रदान करना।

साधारणतया आज के संग्रहालय अनेक प्रकार से अपने समुदाय और राष्ट्र के जन-जीवन के निकट है। सम्भवतः संग्रहालयों का यह आदर्श शिक्षात्मक कार्यों में ही सीधा व स्पष्ट दिखाई देता है। आज यह आम धारणा बन गई है कि संग्रहालय शिक्षा संस्थान है निश्चय ही इनके और कार्य भी हैं किन्तु मूलतः ये शिक्षा संस्थानों के रूप में स्वीकृत कर लिए गये हैं। संसार के विभिन्न भागों में फैले हुए संग्रहालयों के शैक्षणिक कार्यक्रमों और अन्य शिक्षणात्मक गतिविधियों में एकरूपता नहीं है। सब अपने-अपने समाज को आवश्यकतानुसार सहायता पहुँचाते हैं। शैक्षणिक संस्थाओं के रूप में संग्रहालय किस प्रकार उपयोगी है और किन-किन तरीकों से समाज उनसे लाभान्वित हो सकता है इसके विस्तृत अध्ययन के लिए अलग-अलग ढंग से विचार किया गया है—

1. संग्रहालयों में शिक्षा
2. संग्रहालयों के द्वारा शिक्षा
3. संग्रहालयों का सांस्कृतिक व शैक्षणिक क्षेत्र में उपयोग

इन्हीं को और अधिक स्पष्ट रूप से विभाजित किया जाय तो वह इस प्रकार होगा—

1. नियमित शिक्षा प्रणाली के क्षेत्र में संग्रहालय की सेवाएँ
2. प्रौढ़ शिक्षा तथा विद्यालयों के बाहर शिक्षा के क्षेत्र में तथा
3. जहाँ खाली समय में जनता को संग्रहालय अपनी सेवाएँ अर्पित करता है।

1. नियमित शिक्षा प्रणाली—विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए संग्रहालय आम तौर पर जो शैक्षणिक सेवाएँ प्रस्तुत करते हैं वे प्रायः सभी संग्रहालयों द्वारा किये जाते हैं और शिक्षण संस्थाएँ अपनी-अपनी आवश्यकतानुसार उसे ग्रहण करती है। इसके लिए संग्रहालय, स्कूलों, कॉलेजों एवं अन्य शिक्षा संस्थाओं के लिए संग्रहालयों की प्रारम्भिक सेवा है विद्यार्थियों के कक्षा के आधार पर अलग-अलग समूह में संग्रहालय देखने के लिए बुलाना उक्त अवसर पर संग्रहालय गाइडों का प्रबन्ध करते हें जो एक या आधे घंटे में विद्यार्थियों को अच्छी तरह से संग्रह के विषय में बताते हैं और गैलरियों में इसके निम्न व्यवस्थाएँ करता है—

लेक्चरर गाइड की व्यवस्था—लेक्चरर गाइड संग्रहालय को भली-भांति दिखा देते हैं यदि चाहे तो विचार-विमर्श कर सकते हैं। इस तरह के कार्यक्रमों की योजना कुछ दिन पूर्व ही बननी चाहिए क्योंकि पहले से निर्मित कार्यक्रमों में यह सुविधा रहती है कि संग्रहालय देखने जाने के एक या दो दिन पहले कक्षा में संग्रह के विषय में जानकारी करा दी जाती है और महत्त्वपूर्ण चीजों के विषय में विशेष रूप से बता दिया जाता है। संग्रहालय में आने पर विद्यार्थी 15-15 के क्रम में बँट जाते हैं। हर समूह में एक गाइड होता है जो संग्रह के बारे में बताता है, ये गाइड संग्रहालय के या विद्यालय के कहीं के भी हो सकते हैं। किन्तु इस बात का ध्यान अवश्य रखा जाता है कि छात्र-छात्राएँ अपनी कक्षा से सम्बन्धित सामग्री को देखने में ही अधिक समय दें। इस प्रकार विद्यार्थीगण बड़े ही मनोयोग से संग्रहालय का अध्ययन करते हैं और कभी-कभी गैलरी में लगी किसी महत्त्वपूर्ण वस्तु पर विचार-विमर्श भी करते हैं। ये कार्यक्रम बड़े प्रभावशाली सिद्ध हुए हैं। इस सम्बन्ध में एक सावधानी अवश्य रखनी चाहिए कि कभी भी बहुत-सी चीजें दिखाकर विद्यार्थियों को परेशान नहीं करना चाहिए। कभी-कभी दल के नेता प्रदर्शित वस्तु या उनकी किसी विशेषता के विषय में प्रश्न भी पूछते हैं जो उनकी अभिरुचि का परिचायक है।

प्रत्यक्षीकरण विधि द्वारा ज्ञान—विद्यार्थियों को संग्रहालय से सम्बन्धित ज्ञान देने की सर्वोच्च विधि है प्रत्यक्षीकरण विधि। इसके लिए आवश्यक है कि संग्रहालय में ही प्रेक्षागृह या किसी हाल में बैठाकर संग्रह का पूरा परिचय दिया जाय इसे भाषण, स्लाइड या चलचित्र प्रदर्शन के द्वारा सम्पन्न किया जा सकता है। इन सबमें आर्थिक दृष्टि से सबसे आसान और सुविधाजनक तरीका भाषण है क्योंकि स्लाइड और चलचित्र प्रदर्शन उपलब्ध सुविधाओं पर निर्भर करते हैं। इसके पूर्व परिचय के बाद विद्यार्थियों को गैलरियों में जाने देना चाहिए जहाँ वे अपनी रुचि के अनुसार चीजों को देखें, उनके विषय में विचार-विमर्श करें, नोट लें और आधे घंटे बाद होने वाली गोष्ठी में भाग लेने के लिए अपने आपको तैयार कर सकें। इस तरह के कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य होता है लोगों की व्यक्तिगत रुचि को प्रोत्साहन देना। क्योंकि गाइडों द्वारा दिये गये लेक्चरर दल के सभी सदस्यों को अच्छे नहीं लगते। इस तरह से एक लाभ और भी होता है कि लोग दलीय स्तर पर नहीं व्यक्तिगत स्तर पर चीजों को देखते हैं और अपनी राय देते हैं।

Learning by doing करके ज्ञान प्राप्त करना—कल्पनाशील और रचनात्मक संग्रहालय लेक्चरर शीघ्र ही यह जान जाता है कि अमुक दर्शक को कौन-कौन-सी चीजें पसन्द हैं और किस प्रकार प्रभावशाली ढंग से दर्शकों को संग्रहालय दिखाया जा सकता है। शीघ्र ही उसके तथा दर्शकों के बीच आत्मीयता स्थापित हो जाती है और वह दर्शकों की रुचि के अनुसार ही चीजें दिखता है। किन्तु इन सबसे कक्षा अध्यापकों का सहयोग अपेक्षित

है—विद्यार्थियों के संग्रहालय देखकर आने के दो-चार दिन बाद कक्षा अध्यापक को चाहिए कि वह कक्षा में संग्रहालय से सम्बन्धित कुछ काम दें जैसे—मित्र को पत्र लिखने के लिए दें जिससे उक्त संग्रहालय का विस्तृत विवरण हो या उस पर कोई लेखादि हो। विद्यार्थियों के कार्यक्रम का यह आवश्यक अंग है क्योंकि इससे विद्यार्थिगण ध्यान से संग्रहालय देखते हैं और धीरे-धीरे उनकी रुचि इस विषय में बढ़ती है जो उनके ज्ञान वर्द्धक में सहायक होता है। पंक्तिबद्ध कतारों में बच्चों को गैलरियों में चुपचाप घुमाने वाले तरीके में अनेक त्रुटियाँ हैं। इससे बच्चों को प्रदर्शनी का छिछला ज्ञान होता है और वे जो भी सीखते हैं शीघ्र ही भूल जाते हैं। क्योंकि न तो पहले उनको संग्रह का परिचय दिया जाता है और न ही संग्रहालय देखने के बाद कक्षा में उनके संग्रहालय सम्बन्धी लेखन कार्य ही कराया जाता है। इसके लिए आवश्यक है कि 'Learning by doing' करके विधि द्वारा शिक्षा दी जाय। इसमें बालक को वास्तविक कर्ता के रूप में रख कर सीखने का अवसर दिया जाता है। संग्रहालय में पुस्तकों से दूर हटकर वास्तविक सामग्रियों के पास खड़ा होकर उसके लेबुल और चार्ट को पढ़ कर उसके विषय में अपनी जिज्ञासा को पूछ कर विद्यार्थी वास्तविक ज्ञान प्राप्त करता है। यहाँ उसका अध्ययन हठात नहीं होता बल्कि उसकी रुचि के अनुसार उसकी अपनी क्रिया से होता है। इससे वह करके सीखने के पक्ष में अपना ज्ञान बढ़ाता है।

अनौपचारिक या प्रौढ़ शिक्षा—संग्रहालय चाहे किसी वर्ग का हो, चाहे जिस किस्म का हो, मूलतः ध्येय है—अनौपचारिक शिक्षा, मनोरंजन के माध्यम से प्रस्तुत करना है। पिछले 25 वर्षों में प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में संग्रहालयों का उपयोग कई प्रकार से बहुत बढ़ गया है। संसार के विभिन्न हिस्सों में इन्हें कई प्रकार से काम में लाया गया। प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में निम्न तरीके प्रयोग किये जाते हैं—

भाषण—प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में सम्भवतः सबसे अधिक प्रचलित और पुराना तरीका है—भाषण। संग्रहालय विद्वानों के भाषण आयोजित करते हैं। संग्रहालय की आर्थिक स्थिति के अनुसार कहीं-कहीं वर्ष में एक या दो भाषण होते हैं तो कहीं भाषणों का क्रम चलता है। इन भाषणों के विषय बहुधा संग्रह से सम्बद्ध होते हैं। भाषणों के ऐसे कार्यक्रम जिन्हें प्रायः प्रकाशित भी किया जाता है सभी पुराने संग्रहालयों में आयोजित किये जाते हैं भारत में इण्डियन म्युजिम, कलकत्ता और राजकीय संग्रहालय, मद्रास के नाम उल्लेखनीय हैं। इन दोनों संग्रहालयों ने वैज्ञानिक जगत को महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। शिक्षा प्रसार की इस अनौपचारिक पद्धति का उपयोग जिससे किसी प्रकार की डिग्री या डिप्लोमा की प्राप्ति नहीं होती, अभी भी बहुत प्रचलित व लोकप्रिय है। इसका विकास बड़ा लाभदायक होगा। यदि इन भाषणों का प्रबन्ध किसी विश्वविद्यालय के सहयोग से किया जाय तो इसमें औपचारिकता आएगी और कुछ समय बाद विद्वत क्षेत्र में मान्यता भी प्राप्त हो सकती है।

दृश्य साधनों का प्रयोग—अनौपचारिक संग्रहालययी शिक्षा में दृश्य साधनों ने प्रभावशाली भूमिका निभाई है। रंगीन स्लाइडों और चलचित्रों के विकास ने सभी क्षेत्र में भाषणों, संग्रह के प्रदर्शन को बहुत प्रभावशाली बल्कि लोकप्रिय भी बनाया है। इसी प्रकार कला व विज्ञान दोनों ही में—चित्र, मूर्ति, वैज्ञानिक या प्राकृतिक विज्ञान की विभिन्न विधियों के प्रदर्शन वर्णनात्मक भाषणों को अधिक सुगम बनाते हैं क्योंकि देखने पर जटिल-से-जटिल विधियाँ भी आसानी से समझ में आ जाती है।

ललित कलाओं का प्रशिक्षण—कुछ देशों में संग्रहालय शैक्षणिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत ललित कलाओं की नियमित कक्षाएँ भी चलाते हैं। इन कक्षाओं में विद्यार्थीगण अनेक प्रकार से कार्य करते हैं। उदाहरणार्थ—चित्रकला की कक्षा में चित्र बनाते हैं और हस्त कौशलों में विभिन्न माध्यमों के प्रयोग से अपनी रुचि के अनुसार चीजें बनाते हैं कहीं-कहीं पर स्टूडियो भी होते हैं जहाँ लोग अपनी इच्छानुसार काम करते हैं। इनका निश्चित पाठ्यक्रम होता है किन्तु, उसे पूरा करने पर कोई डिग्री डिप्लोमा या सर्टिफिकेट नहीं प्राप्त होता। क्लब भी संग्रहालयों के इन पाठ्यक्रमों से मिलते-जुलते कार्यक्रम आयोजित करते हैं जैसे—दृश्य चित्रण की कक्षाएँ, पक्षियों से सम्बद्ध अध्ययन, पौधों का संग्रह, बहुमूल्य पत्थरों को तराशना, छोटे-मोटे वैज्ञानिक यंत्र बनाना या ऐसे ही अन्य काम जो मूलतः शैक्षणिक होते हैं। किन्तु बेहतर यह होगा कि इन्हें दूसरी श्रेणी, खाली समय में संग्रहालय द्वारा प्रदत्त सेवाओं के अन्तर्गत समय में संग्रहालय द्वारा सेवाओं के अन्तर्गत रखा जाय क्योंकि ये कार्यक्रम बड़े अनौपचारिक होते हैं। भारत में स्थापित पुरातत्त्व व इतिहास सम्बन्धी संग्रहालय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत बहुत से उपयोगी विषयों पर जनता को अवगत करा सकते हैं। इस क्षेत्र में भारतीय संग्रहालय समाज के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि बच्चों से वृद्ध तक, युवा से बच्चों तक, महिला—अनपढ़ से पढ़ी-लिखी वर्ग तक, विद्वानों से एक साधारण वर्ग तक, सभी वर्ग के लिए बिना किसी निर्धारित पाठ्यक्रम के प्रौढ़ शिक्षा के माध्यम से संग्रहालय अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करता है।

संग्रहालय एवं खाली समय—इस विभेद के अन्तर्गत संग्रहालय सेवा का साधारण रूप है—छुट्टियों के दिन मनोरंजन के लिए संग्रहालय जाना फिर भी आज के विकसित तकनीकी युग में जबकि शारीरिक श्रम करना पड़ता है, लोगों को अपनी रुचि के अनुसार काम करने के लिए अत्यधिक समय मिलता है। अब यह आशा की जाती है कि लोग खाली समय का सदुपयोग सांस्कृतिक कार्यक्रमों में किया करेंगे। समाज में तकनीकी और शैक्षणिक विकास के साथ-ही-साथ यह प्रवृत्ति भी विकसित हो रही है। संग्रहालयों ने इस आन्दोलन का लाभ उठाया और अपने दरवाजे सबके लिए खोल दिये। इसके तहत मनोरंजन एवं शिक्षा के लिए संग्रहालय ने निम्न तरीके अपनाये हैं—

1. खाली समय में संग्रहालय ने जन साधारण के मनोरंजन के लिए चित्रकला, मूर्तिकला तथा विभिन्न हस्त कौशलों की कक्षाएँ चलाते हैं। इनमें संग्रहालय की ओर से कलाकारों तथा उन लोगों के लिए जो अपनी कला विषयक रुचि को अधिक परिष्कृत करना चाहते हैं, माडेल का भी प्रबन्ध होता है। इसी प्रकार कुशल गाइडों के निर्देशन में रत्नों को तराशने और जड़ने का काम, खनिज पदार्थों और पौधों के संग्रह हेतु खेतों और पहाड़ी स्थानों में जाना भी संग्रहालय के इस वर्ग के कामों में आता है।

2. इनके अतिरिक्त संग्रहालय की ओर से समय-समय पर कला-पुरातत्त्व के सम्बद्ध स्थानों पर विचार गोष्ठियों का आयोजन भी होते हैं जिनमें इन विषयों के विद्वानों के अतिरिक्त रुचि रखने वाले साधारण लोग भी सम्मिलित होते हैं। थाई देश में इस प्रकार के कार्य बड़ी सफलता से किये गए और वहाँ के संग्रहालयों ने इस क्षेत्र में आदर्श स्थापित किये। थाई देश के संग्रहालयों ने प्रौढ़ों के खाली समय के सदुपयोग के लिए विभिन्न प्रकार के अवसर प्रदान करने में सराहनीय कार्य किया है।

3. बच्चों और किशोरों के लिए संग्रहालय छुट्टी के बाद संध्या समय या साप्ताहिक छुट्टी के दिनों में कार्यक्रम रखते हैं, जिनमें कला, नृत्य, संगीत, प्राकृतिक इतिहास और विज्ञान

सम्बन्धी विषयों की कक्षाएँ होती हैं और इन विषयों में रुचि रखने वाले के क्लब होते हैं। आमतौर से बड़े संग्रहालयों के विशेष विभाग या बाल या किशोर संग्रहालय जो अब दुनिया के अधिकांश भागों में पाये जाते हैं बच्चों के लिए तरह-तरह के आयोजन करते हैं। ये कार्य क्रम बड़े ही यत्न से बच्चों के शारीरिक मानसिक विकास को ध्यान में रखकर बनाये जाते हैं और विद्यालय की शिक्षा पद्धति से मिलते-जुलते होते हैं।

भारत ने इस आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया। कई बड़े संग्रहालयों में बच्चों के लिए विशेष विभाग खोला गया जैसे—राजकीय संग्रहालय, मद्रास।

4. खाली समय में बच्चों और प्रौढ़ों के लिए शैक्षणिक सेवाएँ प्रस्तुत करने के अतिरिक्त संग्रहालय अन्य सामाजिक काम भी करते हैं, जिनका महत्त्व सांस्कृतिक क्षेत्र में अधिक होता है। संग्रहालयों का अपने समाज के सांस्कृतिक जीवन में एक विशेष स्थान होता है, यहाँ कोई ऐसे कार्यक्रम होते हैं जिनमें स्थानीय लोग भाग लेते हैं और सामाजिक उत्सवों से परिचित होते हैं।

5. संग्रहालयों में सांस्कृतिक और वैज्ञानिक अभिरुचि से सम्बन्धित विषयों पर कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं जिनमें आमतौर पर कक्षाओं तथा क्लबों की बैठकें होती हैं। इनमें संगीत सम्मेलन, नृत्य के कार्यक्रम, कविता पाठ, नाट्य समारोह, चलचित्र प्रदर्शन आदि सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं। इन कार्यक्रमों में नये प्रयोगों को प्रोत्साहन दिया जाता हैं, ये कई तरह के होते हैं यथा—नए ढंग के वाद्य-यन्त्र, नए राग, ऐतिहासिक या प्रयोगात्मक चल चित्र। ये सांस्कृतिक कार्यक्रम समाज के सांस्कृतिक विकास में अभूतपूर्व योगदान देते हैं।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है संग्रहालय मनोरंजन और शिक्षा के केन्द्र होते हैं। साथ ही आज के संग्रहालयों का यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण पहलू है और इसमें बहुत से तथ्य निहित है।

संग्रहालय के शैक्षणिक कार्यों के माध्यम

संग्रहालय के शैक्षणिक कार्य अधोलिखित हैं—

1. प्रदर्शनी
2. जनसम्पर्क
3. पर्यटन
4. प्रकाशन

1. प्रदर्शनी—संग्रहालयों के शैक्षणिक कार्यों का प्रमुख माध्यम प्रदर्शनियाँ हैं, ये कई प्रकार की हो सकती हैं, यथा—जन साधारण के लिए प्रदर्शित संग्रहालय का ही स्थायी संग्रह या थोड़े समय के अन्तराल पर बदलती हुई प्रदर्शनियों के कार्यक्रम के अन्तर्गत किसी विषय के विशेष पहलू को स्पष्ट करने के लिए आयोजित प्रदर्शनी या किसी विशिष्ट कला-शैली की जटिलताओं को समझाने के लिए उसकी प्रक्रियाओं की प्रदर्शनी। अस्थायी प्रदर्शनियों में प्रदर्शित होने वाली वस्तुएँ संग्रह सम्पति हो सकती हैं या अन्य संग्रहों से मँगायी जा सकती है। इस प्रकार प्रदर्शनियाँ सभी के देखने, मनोरंजन तथा ज्ञानवर्द्धन के लिए होती है जिन्हें लोग अपनी रुचि के अनुसार देखते हैं। प्रदर्शित विषय में अपनी रुचि के अनुसार कोई सरसरी निगाह से देखते हैं तो कोई गहरा अध्ययन करते हैं, बहुत से ऐसे लोग भी जो संग्रहालयों के सामान्य शैक्षणिक कार्यक्रमों जैसे—भाषण, प्रदर्शन आदि में भाग नहीं लेते ऐसी प्रदर्शनियों को देखते हैं तथा ज्ञानार्जन करते हैं। सम्भवतः इन प्रदर्शनियों के द्वारा सामान्य दर्शकों की संख्या भी बढ़ जाती

है और वे लोग एक से अधिक बार संग्रहालय देखने आते हैं तथा वहाँ के कार्यक्रमों में अधिक रुचि लेते हैं और इसीलिए सभी प्रकार के संग्रहालयों में प्रदर्शनियों का बहुत महत्त्व है।

प्रदर्शनियों का महत्त्व—संग्रहालयों में आकर्षक तथा प्रभावशाली प्रदर्शनियों के महत्त्व की ओर ध्यान आकर्षित करना आवश्यक होता है। प्रदर्शनियों से निम्न लाभ हैं—

1. एक संग्रहालय समाज में शिक्षा की महत्त्व वृद्धि कर सकता है, अपने निकटवर्ती क्षेत्रों में पर्यटकों का आकर्षण केन्द्र बन सकता है, नगर की प्रतिष्ठा में वृद्धि कर सकता है और देश की सांस्कृतिक ख्याति बढ़ाने में योग दे सकता है।

2. प्रदर्शनियाँ संग्रहालय के आय की स्रोत होती है। अपनी आय की वृद्धि कर सकता है तथा अपने नगर की व्यापारिक गतिविधियों को विकसित कर सकता है। फ्रांस और इटली के उदाहरणों द्वारा संग्रहालयों का महत्त्व और स्पष्ट किया जा सकता है। विदेशी पर्यटक, प्रति वर्ष जो संग्रहालय देखने आते हैं जिनकी संख्या हजारों की होती है। कला का उत्कट प्रेमी होता है किन्तु फिर भी वे संग्रहालय देखने आते हैं और उन्हें देखकर आनन्द प्राप्त करते हैं। अतएव संग्रहालय भी विदेशी पर्यटकों के लिए बहुत बड़े प्रलोभन हैं। इनके द्वारा विदेशी मुद्रा अर्जित करने में बड़ी सहायता मिलती है और दोनों देशों की समृद्धि में भी महत्त्वपूर्ण वृद्धि होती है। भारत में इसके लिए बड़े अच्छे अवसर हैं क्योंकि यहाँ के गौरवपूर्ण अतीत और वर्तमान के विविध स्वरूप का प्रदर्शन पर्यटकों को आकर्षित करने में सहायक होगा। दूसरी बात यह भी है कि आज के युग में यातायात के साधन बढ़ने से संसार की दूरी बहुत कम हो गयी है। इस स्थिति में संग्रहालय बहुत ही सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

3. संग्रहालय के कामों और उसकी प्रदर्शनियों में लोक सेवा का पहलू भी प्रथम स्थान रखता है चाहे वह स्थानीय स्तर पर शिक्षा प्रसार का कार्य हो या विदेशियों के सम्मुख अपनी संस्कृति का अच्छा स्वरूप प्रस्तुत करना हो या पर्यटकों से विदेशी मुद्रा अर्जित करने का प्रश्न हो। आज का एक महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि संग्रहालय, प्रदर्शनियों के द्वारा ही जनता तक पहुँचते हैं और इस तथ्य को आजकल के सभी संग्रहालय महत्त्व दे रहे हैं। संग्रहालयों का मुख्य कार्य संचल कार्य करना और स्थायी कार्य प्रदर्शनियों का आयोजन है। इन प्रदर्शनियों की सामग्री बहुधा संग्रह से ही की जाती है।

प्रदर्शनियों के प्रकार—प्रदर्शनियाँ मुख्य दो प्रकार की होती हैं—

1. स्थायी प्रदर्शनियाँ, 2. अस्थायी प्रदर्शनियाँ।

1. स्थायी प्रदर्शनियाँ—स्थायी प्रदर्शनियाँ वे हैं जिनमें संग्रहालय की ही चीजें काफी लम्बे समय तक के लिए प्रदर्शित की जाती हैं।

2. अस्थायी प्रदर्शनियाँ—अस्थायी प्रदर्शनियाँ वे हैं जो थोड़े समय के लिए किसी विशेष अवसर पर आयोजित की जाती हैं। अस्थायी प्रदर्शनियों में संग्रहालय के अतिरिक्त संग्रह की वस्तुएँ भी रखी जाती हैं।

अस्थायी प्रदर्शनियों से लाभ—1. अस्थायी प्रदर्शनियाँ स्थायी प्रदर्शनियों की अपेक्षा अधिक लाभप्रद होती हैं और शिक्षा के क्षेत्र में सीखने के अधिक सुअवसर प्रदान करती हैं। उनका आयोजन एक निश्चित उद्देश्य को लेकर होता है विषय की दृष्टि से क्षेत्र होने से चुनाव की भी स्वतन्त्रता होती है। यही कारण है कि जिस किसी भी विषय पर प्रदर्शनी हो कोने-कोने तक अपना स्पष्ट सन्देश पहुँचाती है।

2. अस्थायी प्रदर्शनियों में संग्रह के अतिरिक्त बाहर की चीजें मंगनी में लेकर लगायी जा सकती हैं जिससे उस विषय की अधिक वस्तुएँ प्रदर्शित की जा सकती हैं। इस स्थिति में प्रदर्शनी अधिक तर्कसंगत और सफल हो सकती है क्योंकि सम्भव है कि किसी संग्रहालय विशेष में एक ही काल की बहुत चीजें हो किन्तु इतिहास का दूसरा पक्ष अधूरा हो, ऐसी हालत में इस कमी को मंगनी की वस्तुओं से पूरा किया जा सकता है।

3. इधर कुछ वर्षों में सभी प्रकार के संग्रहालयों में यह प्रथा-सी चल पड़ी है कि स्थायी प्रदर्शनियों के साथ-साथ थोड़ी जगह परिवर्तनीय अस्थायी प्रदर्शनी के लिए भी आरक्षित रहती है। इन अस्थायी प्रदर्शनियों के द्वारा संग्रहालय का क्षेत्र जनता के लिए कई प्रकार से बढ़ जाता है—अधिकारियों की ज्ञान वृद्धि होती है क्योंकि प्रदर्शनी आयोजित करने तथा सूचीपत्र तैयार करने के लिए जो लोग उस विषय सम्बन्धी साहित्य पढ़ते हैं और जनता को नई-नई वस्तुओं की जानकारी प्राप्त होती है छोटे संग्रहालयों के लिए अस्थायी प्रदर्शनियाँ अधिक महत्त्वपूर्ण होती है क्योंकि इनके द्वारा जन साधारण में शिक्षा और संस्कृति के प्रति जागरूकता उत्पन्न होती है। इसी प्रकार ये प्रचार कार्य में भी सहायक होती है।

4. अस्थायी प्रदशनियाँ बहुत महत्त्वपूर्ण होती हैं। कई बार बड़े संग्रहालयों के हर विभाग में सग्रहीत वस्तुओं की संख्या बहुत होती है और बहुत सावधानी से छाँटने पर भी इतनी अच्छी चीजें निकल आती हैं तो उपलब्ध गैलरियों में उन्हें सजाना असम्भव होता है। गैलरियों में स्थान सीमित होने से सभी अच्छी चीजों एक साथ नहीं दिखाई जा सकती अतएव प्रदर्शित वस्तुओं को बदलते रहना अच्छा होता है। जिससे दर्शकों को नई-नई चीजें देखने को मिलती है और संग्रहालय में उनकी रुचि बनी रहती है तथा थोड़े से संग्रह पर जोर भी नहीं पड़ता वरन् सभी चीजें बारी-बारी से बाहर आती हैं। इससे एक और होता है—जब चीजें प्रदर्शित होती हैं तो उनके साथ उदार दाताओं के नाम दिये जाते हैं उनसे सम्बन्धित प्रकाशित सामग्री भी रखी जाती हैं जिससे दानकर्ता उत्साहित होते हैं और उनके द्वारा प्रदत्त सामग्री गोदाम के एक कोने में नहीं पड़ी है बल्कि गैलरी में लगी हुई है। संग्रहालय के स्थापना दिवस आदि विशेष अवसरों पर थोड़े समय के लिए प्रदर्शनियों के आयोजन किये जा सकते हैं। ऐसी प्रदर्शनियों के द्वारा संग्रहालय का प्रचार होता है और वे जनता के अधिक निकट आते हैं।

वास्तव में इन प्रदर्शनियों के कारण संग्रहालय आकर्षण केन्द्र बन जाते हैं दर्शकों की संख्या बढ़ जाती है, बहुत अधिक लोग इससे लाभान्वित होते हैं ज्ञान प्राप्त करते हैं और यही नहीं इन प्रदर्शनियों से सम्बन्धित बहुत से शैक्षणिक कार्यक्रम भी होते हैं जिससे नवीनता बनी रहती है। इससे समाचार पत्रों, रेडियो और टेलीविजनों को अपने कार्यक्रम तैयार करने तथा लेख लिखने के लिए नई सामग्री मिलती है और ये साधन दर्शकों को भी आकर्षित करते हैं।

अस्थायी प्रदर्शनियों के उद्देश्य—परिवर्तनशील या अस्थायी प्रदर्शनियों के उद्देश्य स्थानों के अनुसार भिन्न-भिन्न होते हैं जैसे—एक बड़े संग्रहालय में सभी वस्तुएँ प्रदर्शित नहीं रखी जा सकी किन्तु वहाँ के प्रमुख संग्रह को अस्थायी प्रदर्शनियों के द्वारा अधिकाधिक प्रकाश में लाया जा सकता है। किसी भी बड़े संग्रहालय से यह अपेक्षा नहीं की जा सकती कि अपनी स्थायी प्रदर्शनियों में सभी विषयों की मुख्य और सहायक सामग्रियों को लगा कर रखे क्योंकि एक तो गैलरियों में स्थान की कमी होती है और दूसरे बड़े-से-बड़े संग्रह में भी एक विषय की सभी चीजें नहीं होती। इन दोनों समस्याओं का समाधान है—अस्थायी प्रदर्शनी जिसमें एक

विषय विशेष से सम्बद्ध सामग्री दूसरे संग्रहालयों से थोड़े समय के लिए मंगनी माँग कर लगाई जा सकती है और विषय का क्षेत्र सीमित होने के कारण प्रदर्शनी अपने आप में पूर्ण होती है और उसके विभिन्न पक्षों को अधिक प्रभावोत्पादक ढंग से दिखाया जा सकता है। उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि प्रदर्शनियों का उद्देश्य चाहे वे स्थायी हो या अस्थायी, शैक्षणिक सेवा ही माना जाता है। मुख्य प्रश्न यह है कि मूलतः एक प्रदर्शनियों शिक्षा से सम्बन्धित कैसे मानी जाती है। सर्वप्रथम तो ये जनता को नई चीजें देखने का सुअवसर प्रदान करती हैं। जिन्हें देखकर लोग ज्ञान वृद्धि करते हैं और आजकल पुराने समय की भाँति चीजों को शो केस में रखना ही पर्याप्त नहीं समझा जाता बल्कि उसे अनेक प्रकार से प्रभावशाली बनाने की चेष्टा की जाती है। वास्तव में संग्रहालय विशेषज्ञ पिछले कई वर्षों से इसी बात की चेष्टा करते आ रहे हैं कि प्रदर्शनियों को किस प्रकार अधिकाधिक शिक्षाप्रद बनाया जाय?

प्रदर्शनियों को रुचिकर और ज्ञानवर्द्धक बनाने हेतु आवश्यक सुझाव—प्रदर्शनियों का शैक्षणिक उद्देश्य तभी पूरा हो सकता है जब प्रदर्शों के प्रदर्शन का क्रमबद्ध तर्क संगत हो, उनके लेबुल क्रमबद्ध और उपर्युक्त विधि से लगे हो संचार के उपयुक्त माध्यम हों तथा शिक्षणार्थियों तथा शोधार्थियों के ज्ञान प्राप्त करने के लिए उपयुक्त व्यवस्था हो।

इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रदर्शों के प्रदर्शन हेतु निम्न माध्यम उपयुक्त रहते हैं

1. प्रदर्शनी वस्तुओं को किस क्रम से लगाना चाहिए इस सम्बन्ध में एक तर्क संगत तरीका है—पुरातत्त्व और कला की वस्तुओं को कालक्रम की दृष्टि से लगाना। जैसे—एक चित्रकार के कृतियों की प्रदर्शनी लगानी हो तो उसके कार्यकाल को शैली के विकास क्रम के अनुसार विभाजन कर लेना चाहिए और दीवार या बोर्ड जहाँ पर भी चित्र लगाये जाय उसके ऊपर बड़े-बड़े अक्षरों में कार्यकाल लिख देना चाहिए। इन अक्षरों को यदि कलात्मक ढंग से लगा दिया जाए तो दीवार की सजावट भी हो जाएगी और दर्शकों को मालूम भी हो जाएगा कि नीचे लगे चित्र अमुक वर्ष में बने। इसी प्रकार बहुत से चित्रकारों द्वारा प्रस्तुत प्रदर्शनी में उनके चित्र अलग-अलग समूह में लगाएँ जाए और उनसे काफी ऊँचाई पर दीवार या बोर्ड पर चित्रकारों के नाम लिख दिये जाए। मूर्तियों और स्मारकों में भी स्थान के नाम एक पंक्ति में ऊपर इस प्रकार लिखे जा सकते हैं कि दर्शकों को सुन्दर लगने के साथ-साथ उनका ज्ञानवर्द्धन भी करें।

2. प्रायः 1930 ई० के आस-पास संग्रहालयशास्त्रियों ने यह अनुभव किया कि दर्शक प्रायः एक वस्तु को देखने में लगभग बीस सेकेण्ड लगाता है और यदि लेबुल आकर्षक होंगे तो लोग प्रदर्शित वस्तुओं को देखने में अधिक समय देंगे। क्योंकि वस्तुओं के साथ शब्दों के द्वारा निकटता स्थापित करने में सबसे अधिक सहायक लेबुल होते हैं और उक्त कार्य में दृश्य सहायक चार्ट, नक्शे और फोटोग्राफ आदि होते हैं जिनका उत्तरदायित्व संग्रहालय के तकनीकी कर्मचारियों पर होना चाहिए। लेबुल पर सम्बन्धित प्रदर्श की निर्माण तिथि, प्राप्ति-स्थान, निर्माता का नाम, क्रमांक आदि महत्त्वपूर्ण तथ्यों का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए। क्योंकि इससे दर्शकों को प्रदर्शों के बारे में समझने में आसानी होती है।

3. प्रदर्शनियों को अधिक शिक्षाप्रद बनाने के लिए और उत्तम कलाकृतियों की ओर दर्शकों को विशेष रूप से आकर्षित करने के लिए कहीं-कहीं विस्तृत परिचय देना आवश्यक है। परिणामस्वरूप गैलरी के प्रारम्भ में मूर्ति या चित्रशैली का परिचय तथा उसकी उत्तमोत्तम कृतियों के विवरण लगाने की प्रथा चली, इनके साथ उस क्षेत्र विशेष के मानचित्र तथा फोटोग्राफ

आदि भी लगाए जाते हैं। कभी-कभी प्रदर्शनियों को शिक्षा की दृष्टि से अधिक महत्त्वपूर्ण बनाने के लिए उस विषय से सम्बद्ध अन्य संग्रहों के रंगीन चित्र फोटोग्राफ आदि भी प्रदर्शित किये जाते हैं। जिससे उस विषय का अधिक-से-अधिक ज्ञान हो सके।

4. प्रदर्शनियों को अधिक रुचिकर बनाने के लिए संग्रहालयों ने एक विशेष तरीका अपनाया है जिसमें छपे व लिखे हुए लेबुलों के स्थान पर टेप किये हुए रिकार्ड होते हैं जो महत्त्वपूर्ण वस्तुओं के पास लगे होते हैं। दर्शक प्रदर्शनी में घूमते समय अपनी इच्छानुसार बटन दबाकर उस वस्तु विशेष के बारे में सुन लेते हैं। यह प्रबन्ध विशेषकर ऐतिहासिक व प्राकृतिक इतिहास सम्बन्धी संग्रहालयों के लिए बड़ा लाभदायक होता है। इसी का विकसित रूप टेपरिकार्डर है इसे दर्शक अपने साथ लेकर चलते हैं और सुविधानुसार प्रदर्शित वस्तुओं के विशेष विवरण सुनते हैं। इससे लाभ यह होता है कि दर्शक जितनी देर चाहे वस्तु को देख सकता है और उसी के अनुसार दर्शक यन्त्र को खोल या बन्द कर सकता है।

5. रेकार्ड किये हुए भाषण और व्याख्या आदि अस्थायी प्रदर्शनियों के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। लेबुल प्रदर्शनियों को शिक्षाप्रद बनाने के उत्तम साधन हैं फिर भी आदर्श प्रदर्शनी तो वही कही जाएगी जहाँ दर्शकों और प्रदर्शित वस्तुओं में भावनात्मक सम्बन्ध स्थापित हो सके। जहाँ कलाकृतियाँ स्वयं ही अपना सन्देश पहुँचाने में सफल हो सकें। किसी प्रदर्शनी को मुखर बनाने में बहुत-सी चीजों का हाथ रहता है जैसे—सजाने का ढंग, एक ही शैली की कलाकृतियों का इस प्रकार लगाना कि उनका तुलनात्मक अध्ययन हो सके तथा शो केसों तथा दीवारों पर ही चीजों के लिए उपयुक्त वातावरण बनाना आदि जिससे कि दर्शक को देखने से ही वस्तु के सम्बन्ध में सब कुछ ज्ञात हो सके।

उपर्युक्त तथ्यों के विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि प्रदर्शनियों को उत्तम बनाने के लिए प्रदर्शनियों के मूलभूत सिद्धान्तों को अपनाया जाय जैसे पर्याप्त स्थान, अनुकूल पृष्ठभूमि तथा तर्क सम्मत व्यवस्था आदि। मनुष्य ज्ञान की प्राप्ति मुख्य रूप से देखकर, सुनकर या पढ़कर करता है और प्रदर्शनी देखकर ज्ञान प्राप्त करने का एक साधन है अतएव प्रदर्शनियों में कला, पुरातत्त्व, प्राकृतिक इतिहास या ऐतिहासिक महत्त्व की वस्तुएँ ऐसे सरल एवं आकर्षक ढंग से लगायी जानी चाहिए कि दर्शक देखकर प्रसन्न हो और प्रदर्शित चीजों को समझने में तनिक भी कठिनाई न हो। प्रदर्शनी को इतना सुगम बनाने की चेष्टा करनी चाहिए कि लेबुल की कम-से-कम आवश्यकता पड़े यद्यपि ये लेबुल तथा अन्य सहायक सामग्री पास में उपलब्ध अवश्य रहे क्योंकि हो सकता है कोई दर्शक पढ़ना चाहे। चूँकि संग्रहालय हर उम्र एवं वर्ग के लोगों में शिक्षा का प्रसार एक प्रारम्भिक साधन है। इससे हर वय के लोग अपनी-अपनी रुचि और ग्राह्य शक्ति के अनुसार कुछ-न-कुछ ग्रहण करते हैं किन्तु 20 वीं शती के संग्रहालयों ने प्रदर्शनियों जिनमें स्थायी व अस्थायी दोनों शामिल हैं के माध्यम से इस क्षेत्र में आश्चर्यजनक प्रगति की है।

2. **जनसम्पर्क**—संग्रहालय शैक्षणिक कार्यों द्वारा समाज को लाभान्वित करते हैं। इस कार्य के लिए प्रसार सेवा का सहारा लिया जाता है। वास्तव में आजकल के संग्रहालय अपनी चहारदीवारी तक ही सीमित नहीं रहते, अब उनकी सीमा बढ़ गई है और आज के संग्रहालयों के सामने तो यह चुनौती है कि कौन-सा संग्रहालय समाज के कितने अधिक लोगों तक पहुँच पाता है। शुरू में दुनिया के अधिकांश भागों में सभी प्रकार के संग्रहालयों ने विद्यालयों को विभिन्न प्रकार से अपनी सेवाएँ प्रदान की किन्तु आज तो इस बात की चेष्टा की जाती है

कि सभी प्रकार के लोग चाहे वे धनी हो या गरीब, विद्वान हो या अनपढ़ और बाल हो या वृद्ध संग्रहालय से लाभ उठाएँ। समाज के सभी वर्ग के लोगों को अपनी सेवाएँ प्रदान करने के लिए संग्रहालय अपने प्रांगण में प्रदर्शनियाँ तथा अन्य कार्यक्रम आयोजित करता है। इनमें प्रदर्शित वस्तुएँ संग्रह की होती है किन्तु कई बार बाहर के निजी संग्रहों से भी मंगाई जाती हैं। इसी प्रकार प्रदर्शन के अलावा जनसम्पर्क भी एक सशक्त माध्यम है प्रसार सेवा का।

साधारणतया जनसम्पर्क के अन्तर्गत संग्रहालय तथा उसके कर्मचारियों द्वारा निजी स्तर पर प्रदत्त सभी सेवाएँ आती हैं यथा—विद्यालयों, स्थानीय समितियों तथा संग्रहालयों की अपनी समिति के लिए किये गये अनेक प्रकार के शैक्षणिक, सांस्कृतिक और प्रचार कार्य ही विशेष रूप से संग्रहालयों द्वारा किये जाते हैं। इनके माध्यम भिन्न-भिन्न हैं जिन्हें निम्न प्रकार से वर्णित किया जा सकता है—

1. टेलीविजन का प्रयोग
2. रेडियो द्वारा जन सम्पर्क
3. प्रेस विज्ञप्ति
4. नोटिस बोर्ड का प्रयोग।

1. टेलीविजन का प्रयोग—हाल के वर्षों में टेलीविजन सब से प्रभावशाली माध्यम सिद्ध हुआ है। बहुत से शहरों के बड़े संग्रहालयों में जन सम्पर्क अधिकारी या प्रचार अधिकारी प्रशिक्षित तथा अनुभवी पत्रकार होते हैं। पिछले कुछ वर्षों में कुछ संग्रहालयों ने टेलीविजन केन्द्र भी खोले, यह इस क्षेत्र में एक नया प्रयास है जिसके अन्तर्गत दृश्य शिक्षा का माध्यम गैलरियों के अतिरिक्त टेलीविजन को बनाया गया जन जीवन के शिक्षा प्रसार के लिए यह बड़ा ही उपयोगी सिद्ध हुआ। साधारणतया कोई भी संग्रहालय अपने संग्रह की महत्त्वपूर्ण वस्तु टेलीविजन स्टूडियो तक ले जाने की अनुमति नहीं देता क्योंकि इसमें कई कठिनाइयाँ होती हैं—संग्रहीत वस्तुओं को सुरक्षित अवस्था में स्टूडियो तक ले जाना और ले आना एक कठिन कार्य है। इसलिए संग्रहालय के प्रांगण में सम्पूर्ण सुविधाओं से युक्त एक टेलीविजन केन्द्र होना आवश्यक है। क्योंकि इससे जब भी आवश्यकता होगी व्यावसायिक टेलीविजन सेवा वाले इस स्टूडियो में आकर चित्र बना सकते हैं। इसमें बहुमूल्य वस्तुओं को बाहर ले जाने का खतरा मोल नहीं लेना पड़ता और कर्मचारियों को भी टेलीविजन के व्यावसायिक में भाग लेने के अवसर मिलते है, कभी-कभी संग्रहालय अपनी ओर से टेलीविजन के व्यावसायिक या शिक्षा सम्बन्धी चैनेल पर अपना कार्यक्रम प्रस्तुत करता है। काम के समय में इन आयोजनों में बड़ा धन खर्च होता है। यद्यपि कि इनके कार्यक्रम बड़े ही सफल हुए हैं। यही कारण है कि किसी संस्था से आर्थिक सहायता मिलने पर ही इनके आयोजन सम्भव हैं। सजीव चित्रण के स्थान पर, विशेषज्ञों के साक्षात्कार बड़े व्यावहारिक होते हैं इसमें जिस वस्तु के सम्बन्ध में विशेषज्ञ बोलते हैं वह सामने रखी होती है यह प्रक्रिया कम खर्चीली और सुविधाजनक है। इसके अलावा slide का प्रयोग कर पर्दे पर पुरावस्तुओं तथा उनसे सम्बन्धित जानकारी का प्रदर्शन करना, भीड़-भाड़ के स्थानों पर एक फ्रास्टेड शीशा ऊँचे स्थान पर लगा देना तथा स्लाइट भरे प्रोजेक्टर को एक कोने में लगा देना भी जन सम्पर्क के अच्छे साधन हैं। प्रोजेक्टर एक स्वचालित यंत्र होता है जैसे उसका पहिया घूमता है उसके स्लाइड क्रम से रोशनी के सामने आते हैं और उसकी चित्रछाया उस शीशे पर पड़ती है। इस सहज क्रिया की ओर लोग स्वतः आकृष्ट हो जाते हैं। यह स्वचालित होने से अधिक प्रभावित होता है। 'ओरिएण्टल इन्स्टीच्यूट ऑफ शिकागो' में इस प्रकार का प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार की अनेक अन्य नई विधियों द्वारा प्रचार किया जा सकता है।

2. रेडियो द्वारा जन सम्पर्क—टेलीविजन के माध्यम से जन-सम्पर्क में एक कठिनाई यह उपस्थित होती है कि टेलीविजन फोटोग्राफ के लिए बहुत तेज धूप की आवश्यकता रहती है जिससे कला वस्तुओं को नुकसान पहुँचता है इस समस्या से बचने के लिए इस कार्य में रेडियो एक उपयुक्त माध्यम है। टेलीविजन की तुलना में रेडियो को फोटोग्राफ सम्बन्धी आवश्यकताएँ बहुत ही कम होती है यही कारण है कि संग्रहालय बहुधा उसका उपयोग करते हैं। कहीं-कहीं संग्रहालयों के लेख प्रेस के साथ मिलकर यह योजना बनाई कि जिन वस्तुओं पर रेडियो के साप्ताहिक कार्यक्रम के अन्तर्गत भाषण होते हैं उनके विस्तृत विवरण और चित्र पत्र-पत्रिकाओं के साप्ताहिक विशेषांकों में प्रकाशित कर जनता को संग्रहालय से जोड़ा जाय।

3. प्रेस विज्ञप्ति—नियमित रूप से निकलने वाले समाचार पत्र संग्रहालय और जनता के बीच एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। क्योंकि इसमें संग्रहालयों के विषय में कॉलम और विशेष महत्त्व वाली वस्तुओं पर दैनिक पत्रों में एक स्थान निश्चित रहे जहाँ संग्रहालयों के खुलने और बन्द होने का समय तथा भाषण एवं अन्य कार्यक्रमों का ब्यौरा दिया जाना आवश्यक होता है।

संग्रहालयों के प्रचार में प्रेस प्रतिनिधियों की सद्भावना और रुचि से अधिक प्रभावशाली और कोई तरीका नहीं है क्योंकि इनकी अभिरुचि से बहुत लेखादि निकलते रहते हैं जिनसे संग्रहालयों में जनता की रुचि कई गुना बढ़ सकती है। संग्रहालय शिक्षा व समाज सेवा के क्षेत्र में क्या-क्या सुविधाएँ प्रदान करता है, इस ओर विश्व का ध्यान आकर्षित करने के लिए प्रेस अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण साधन है। उपर्युक्त सन्दर्भ में संग्रहालय कर्मचारियों की अपने संग्रहालय और जनता के प्रति महत्त्वपूर्ण सेवा है प्रकाशन कार्य, विद्वान कर्मचारी समय-समय पर जब भी अवसर मिले, पत्र-पत्रिकाओं में शोधपूर्ण लेख लिख अपने संग्रह का प्रचार जन साधारण में कर सकते हैं। संग्रहालय भी अपनी ओर से बुलेटिन या जर्नल प्रकाशित कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित सूचनाएँ लोगों के संग्रहालययी गतिविधियों की दैनिक क्रिया से परिचित होने का अच्छा माध्यम है। इसके साथ उसके खुलने बन्द होने के समय की जानकारी देना तथा छुट्टियों की सूचना देने में भी पत्र-पत्रिकाएँ महत्त्वपूर्ण माध्यम होती है। इसके साथ ही जब जो क्रियाएँ संग्रहालय में की जाय जैसे—सभाएँ, कक्षाएँ, प्रदर्शनियाँ, नाटक, उत्सव आदि। इसको भी इन्हीं माध्यमों से प्रसारित करना जन-सम्पर्क का एक अच्छा जरिया होता है। कभी-कभी संग्रहालय की फ़ोटो अखबारों में छापना, उसके प्रकाशनों की सूची देना, उसकी समिति की कार्यवाही का विवरण देना, उनकी क्रियाओं और भावी योजनाओं को प्रसारित करना, उद्देश्यों को स्पष्ट करना, उसको सहायता देने वाले के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना, नई विथियों के जोड़ने की सूचना देना आदि क्रियाओं की मदद से जनसम्पर्क और प्रचार कार्य किया जा सकता है। साथ ही छोटे-छोटी लोकप्रिय पुस्तिकाएँ एवं प्रदर्शनियों तथा संग्रह सम्बन्धी विद्वतपूर्ण सूचीपत्रों के प्रकाशन भी संग्रहालयों को लोकप्रिय बनाने में बड़े सहायक होते हैं।

आज के युग में जनसम्पर्क का दूसरा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पहलू विशेषज्ञों से सम्बन्धित हैं—संग्रहालयों के विद्वान और वैज्ञानिक बहुत लाभ पहुँचा सकते हैं। पुरातत्त्व और कला के क्षेत्र में संग्रहालय इस तरह के कार्यों द्वारा बहुत-सी सेवाएँ जनता को दे रहे हैं। बड़े संग्रहालयों के विद्वान क्यूरेटर जो अपने-अपने विषयों के विशेषज्ञ होते हैं आमतौर पर किसी भी कलाकृति की प्रामाणिकता पहचान उसका समय शैली तथा निर्माता आदि के बारे में सही-सही जानकारी दे सकते हैं। इस प्रकार ये भी जनसम्पर्क का एक अच्छा माध्यम है।

4. नोटिस बोर्ड का प्रयोग—संग्रहालय का प्रचार या जनसम्पर्क करने के कई अन्य तरीके हैं। संग्रहालय के बाहर की दीवार पर भीड़-भाड़ वाले स्थानों यथा—बाजार, होटल, क्लब, सिनेमा हॉल, बस स्टैण्ड, अस्पताल, रेलवे स्टेशन तथा स्कूल के पास नोटिस बोर्ड बनाकर संग्रहालय की सूचनाएँ चिपकानी चाहिए। इसको अधिक आकर्षक बनाने के लिए सुन्दर लेख, रंगीन और कलात्मक पोस्टर सजाना चाहिए। कभी-कभी कुछ नवागन्तुक प्रदर्शों या विशेष प्रदर्शों का फोटोग्राफ विकासोन्मुख चार्ट आदि भी लगाने चाहिए कि सहसा लोगों का ध्यान उस पर पड़ते ही संग्रहालय की ओर झुकाव बढ़ सकेगा।

नोटिस बोर्ड पर प्लास्टिक मिश्रित रंग से बना होना चाहिए तथा उस पर प्लास्टिक के अक्षरों से लिखा होना चाहिए कि अधिक आकर्षक और प्रभावक दीखे उस पर जो भी टांगा जाय उसके साथ किसी आकर्षक आकृति का संयोजन हो जिससे उसकी अनायास निगाहें खिंच जाएँ। प्रत्येक सप्ताह जो भी नई सामग्री वीथिका में आवे उसका वहाँ अंकित कर दिया जाय कि दर्शक जो अभी संग्रहालय से लौटा हो, वहाँ बार-बार जाने के लिए उत्सुक रहे।

5. पर्यटन—संग्रहालय द्वारा किये जाने वाले शैक्षणिक कार्यों में पर्यटन भी एक सशक्त माध्यम है। पर्यटन का आशय मात्र विनोदात्मक नहीं होता बल्कि कुछ समय के लिए तनाव, श्रम, नियमित प्रकार के कार्य से अलग होकर रहना और दूसरे स्थानों के विषय में जानना होता है। संग्रहालय ज्ञान का स्रोत होता है। पर ऐसा स्रोत है जहाँ ज्ञान की प्राप्ति अनायास खेल, आनन्द आदि के साथ होती है। यहाँ पहुँचकर कोई भी व्यक्ति कला, संस्कृति, सामाजिक जीवन, पर्यावरण आदि के विषय में जानता है। इसके लिए ऐसे स्थानों पर जहाँ पर्यटक आते रहते हैं वहाँ भी संग्रहालय खोले जाते हैं। साथ ही संग्रहालयों की स्थापना पर्यटन स्थलों को अधिक आकर्षक बनाने पर्यटकों को अपने के लिए प्रेरणा देने हेतु अपनी परम्परा के प्रचार के लिए वहाँ की जाती है। यही कारण है कि भारत में नालन्दा, साँची, सारनाथ आदि पर्यटन स्थलों पर संग्रहालयों की स्थापना की गई है। अभी हाल में बिहार प्रान्त के बक्सर जनपद को राज्य सरकार ने पर्यटन स्थल घोषित किया है तो वहाँ संग्रहालय भी खोला गया है।

संग्रहालय द्वारा पर्यटकों का उद्देश्य मनोरंजन और ज्ञान प्राप्त करना होता है। अपने न्यवसित स्थाम से बाहर रह कर जब पर्यटक किसी दूसरे स्थान पर अपना घर छोड़कर पहुँचता हैं तो वह पहले उस स्थान के विषय में जानना चाहता है। वहाँ की भू-प्रकृति, नदियाँ, पर्वत, जीव-जन्तु, वनस्पतियाँ आदि। इसके लिए या तो उसे बहुत कुछ पढ़ना होना या बहुत समय रहकर घूमना होना। पर जैसे ही वह प्राकृतिक इतिहास के कक्ष में किसी भी संग्रहालय में प्रवेश करता है उसे वहाँ का भौगोलिक पर्यावरण, जीव-जन्तु, वनस्पतियाँ, वेश-भूषा, जातीय स्थिति, सामान्य जीवन आदि के विषय में ज्ञान प्राप्त होता है।

पर्यटन के माध्यम से संग्रहालयों द्वारा किये जाने वाले शैक्षणिक कार्यों का प्रमुख उद्देश्य होता है—पर्यटकों को बिना पुस्तक के स्थान तथा देश की जीवन विधि से परिचित कराना साथ ही देश की कला और संस्कृति का प्रसार पर्यटकों के माध्यम से कराना कि देश का व्यक्तित्व बाहर उजागर हो सके संग्रहालय में आने पर पर्यटकों का यह कौतुहल होता है कि यहाँ के लोग कैसे हैं? उनकी परम्पराएँ और रीतियाँ कैसी हैं, लोगों की वेश-भूषा मानसिक अवस्था और रुचियाँ कैसी है, इनका विकास किस प्रकार हुआ है आदि प्रश्न पर्यटक के कौतूहल को बढ़ाते हैं तो इसका समाधान संग्रहालय में हो जाता है।

पुरातत्त्व इतिहास और कला विषयक, सुव्यवस्थित आकर्षक और शिक्षाप्रद संग्रहालय

पर्यटकों के लिए समय व्यतीत करने की अच्छी जगह है और इसमें पर्यटकों को नई-नई चीजों की जानकारी भी होती है। भारत के विभिन्न भागों की हर शैली और हर काल की कलाकृतियों के उदाहरण से भरा नई दिल्ली का राष्ट्रीय संग्रहालय प्रत्येक पर्यटक को भारत के अतीत गौरव से परिचित कराता है यहाँ गैलरियों के द्वार के पास ही लगे संक्षिप्त तथा मनोरंजन विवरण भारत के सांस्कृतिक इतिहास के गौरवपूर्ण अतीत के विभिन्न युगों और उनमें प्रचलित विभिन्न कला शैलियों से अवगत कराते हैं और तत्पश्चात दर्शक उन कलाकृतियों को देखता है जो भारतीय कला के बेजोड़ उदाहरण हैं। इससे आकर्षित होकर विदेशी पर्यटक संग्रहालय में रुचि लेते हैं और इसमें उनकी आय में वृद्धि हो सकती है। इसी प्रकार बहुत से राज्य संग्रहालय और विभिन्न क्षेत्रों के छोटे-छोटे संग्रह अपने-अपने क्षेत्रों की संस्कृति और इतिहास सम्बन्धी विवरण तैयार कर विशेष प्रकार की सेवा प्रदान कर सकते हैं। इन स्थानों को आकर्षक बनाने से विदेशी पर्यटकों से होने वाली आय में वृद्धि के साथ भारतीय संस्कृति का प्रसार होता है तथा शैक्षणिक सेवा में अभिवृद्धि होती है। इससे भारतीय पर्यटकों को भी जो अपने देश के कोने-कोने में फैली हुई संस्कृति से परिचित होंगे।

(इधर कुछ वर्षों से भारत ने पर्यटक उद्योग की ओर अधिक ध्यान दिया है। ऐसा करने का उद्देश्य विदेशी मुद्रा अर्जित करना ही नहीं है बल्कि अन्य बातें भी हैं जिससे देश लाभान्वित होता है। इस सन्दर्भ में भारतीय संग्रहालय अन्तर्राष्ट्रीय आन्दोलन से भी लाभान्वित हो रहे हैं। क्यांकि आज सभी जगह विदेशी संग्रहालयों में रुचि लेते हैं इस तथ्य के कारण नेताओं (जो शैक्षणिक सेवाओं से सम्बन्धित हैं) की दृष्टि में संग्रहालयों का महत्त्व शैक्षणिक सेवा हेतु बढ़ता जा रहा है। भारतीय सन्दर्भ में 1966 के अन्त में यूनेस्को ने अपनी बैठक में यह स्वीकृत कर लिया कि प्राचीन स्मारक और संग्रहालय पर्यटकों को आकर्षित करने में उत्तम साधन है और इस बात पर अधिक जोर दिया कि विकासशील देशों में भी जहाँ विकास के साधनों में बड़ी प्रतियोगिता है, प्राचीन स्मारकों को सुरक्षित रखना, उन्हें सुन्दर बनाना जिससे पर्यटक वहाँ अधिक-से-अधिक लाभ उठा सके, आर्थिक दृष्टि से बड़ा ही लाभदायक है। क्योंकि जितना खर्च इन स्मारकों और संग्रहालयों को ठीक रखने में लगता है, उससे कई गुना अधिक लाभ थोड़े ही समय में हो जाता है। पर्यटन से बढ़ती हुई आमदनी में देश के आर्कषक प्राचीन स्मारक एवं संग्रहालय महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं, अतएव उन्हें अधिकाधिक आकर्षण तथा सुविधायुक्त बनाना चाहिए जिससे दर्शक उन नगरों या देशों में अधिक दिन रुकना चाहें।

इधर कुछ वर्षों से भारत ने पर्यटन उद्योग की ओर अधिक ध्यान दिया है ऐसा करने में उसका उद्देश्य केवल विदेशी मुद्रा अर्जित करना ही नहीं है बल्कि अन्य बातें भी हैं जिनसे देश लाभान्वित होता है। आशा है भारतीय संग्रहालयों के कर्मचारी इस अवसर का जो उन्हें और उनकी संस्थाओं को मिल रहा है, लाभ उठाएँगे और पर्यटन उद्योग के विकास में अन्य संस्थाओं का सहयोग से मदद पहुँचाएँगे कुछ स्थितियों में उन्हें सहायता की आवश्यकता पड़ सकती है और हो सकता है कि यह मदद आर्थिक हो किन्तु यदि संग्रहालय अपने समुदाय को समुचित रूप से सेवाएँ अर्पित करते आ रहे हैं तो उन्हें आर्थिक सहायता मिलने में कोई कठिनाई नहीं होगी।)

५. प्रकाशन—यद्यपि संग्रहालयों के शैक्षणिक कार्यक्रमों के महत्त्व की प्रवृत्ति अभी नाम मात्र की रही है परन्तु आज बहुत से संग्रहालय इस दिशा में प्रयासरत हैं और इस दिशा में उनका एक महत्त्वपूर्ण कदम प्रकाशन है। प्रकाशन का उद्देश्य संग्रहालय के संग्रहों की

जानकारी देना है क्योंकि सूचना मात्र ही संग्रहालय से उपेक्षित नहीं है। कुछ स्थायी और महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों के लिए संग्रहालय कुछ विशिष्ट क्रियाएँ करता है। यही कारण है कि संग्रहालयों में पब्लिकेशन डिवीजन भी साथ में लगा होता है। जहाँ यह नहीं है वहाँ संग्रहालयाध्यक्ष एवं इस क्रिया का दायित्व अपने ऊपर लेता है। इसमें निम्न प्रकार के प्रकाशन किये जाते हैं—

1. पिक्चर पोस्टकार्ड—पोस्टकार्ड जिसके एक ओर संग्रहालय के किसी अच्छे प्रदर्श का चित्र होता है जिसके नीचे उसका नाम लिखा रहता है तथा दूसरी ओर आधा खाली चिट्ठी के लिए होता है और शेष आधा पता के लिए इसकी माँग बाहरी दर्शक या पर्यटक करते हैं यह प्रमाण होता है कि उस व्यक्ति में अमुक संग्रहालय को देखा है। इस पर पत्र लिखने से संग्रहालय के विषय में बहुत कहना नहीं होता यह कार्ड ही स्वयं अपनी बात कह देता है। प्रायः प्रत्येक संग्रहालय से ऐसे पिक्चर कार्ड्स निकली है। भारत में यह कुछ हल्के प्रकार का होता है पर जब विदेशी पिक्चर कार्ड्स आते हैं तो वे कागज, बनावट, रंग आदि से बड़े ही आकर्षक होते हैं। इसके पीछे यह ध्यान रखना चाहिए कि यह बड़े ही उत्तम रीति, आकर्षक प्रदर्श, सुन्दर छपाई और अच्छे कागज पर होना चाहिए क्योंकित यह दूसरे जगह जाकर अपना स्थान स्थापित करेगा। ये छपाई या तो अकेले होते हैं या एक साथ छः की संख्या में। प्रायः बड़े संग्रहालय छः की संख्या में लगे ऐसे कार्ड छापते हैं। इन पिक्चर पोस्टकार्डों से संग्राहलययी शिक्षा का व्यापक प्रचार-प्रसार होता है। जन सामान्य संग्रहालय प्रदर्शों को देखकर उनकी कला से आकृष्ट होकर बार-बार संग्रहालय में आते हैं और इससे शिक्षा का व्यापक प्रचार-प्रसार होता है।

2. लीफलेट और फोल्डर—लीफलेट एक पृष्ट का एक पक्षीय विवरण होता है। किसी एक विषय के सम्बन्ध में इसकी रचना मिलती है। कुछ से केवल सुविधाओं का ज्ञान प्राप्त होता है जो संग्रहालय में उपलब्ध है, कुछ से महत्त्वपूर्ण संग्रहों का परिचय प्राप्त होता है आदि। फोल्डर में एक साथ कई प्रकार का ज्ञान निहित होता है।

3. मानचित्र निर्देशक—मानचित्र निर्देशक वह माध्यम होता है जिससे दर्शक को संग्रहालय का पूरा विवरण प्राप्त होता है। दर्शक को इससे ज्ञान मिलता है कि किस तल पर कितने पक्ष हैं प्रत्येक में क्या-क्या प्रदर्शित हैं, कितने अनुभाग हैं कौन-कौन से प्रदर्श अधिक आकर्षण हैं आदि। इसको किन्हीं संग्रहालयों में गाइड इन्फर्मेशन नाम भी दिया है। इसके कवर के दोनों पृष्ठों पर अच्छे-अच्छे प्रदर्शों का चित्र होता है और आवश्यक सूचनाएँ होती हैं। अन्दर के पृष्ठों पर तलों का मानचित्र, अनुमान और मार्ग आदि बना होता है एवं गैलरी में प्रवेश तथा निकास का मार्ग भी होता है।

4. पैम्पलेट—यह किसी एक विशिष्ट विषय से सम्बन्धित होता है। कभी-कभी किसी विशिष्ट टॉपिक पर लेख या भाषण इसमें रहता है। पर जो कुछ भी होता है वह उसी सन्दर्भ में होता है जिस सन्दर्भ में यहाँ प्रदर्श रहते हैं। उनमें से कोई चित्रकला पर हो सकता है कोई किसी विशेष काल की मूर्ति पर कोई शस्त्रास्त्रों पर हो सकता है। इस प्रकार एक क्रम में कई प्रदर्शों के विषय में लेख लिख कर एक साथ संकलित किए जा सकते हैं।

5. गाइड बुक—एक संग्रहालय कई सेक्सन (विभागों) में विभक्त होता है। प्रत्येक सेक्सन का एक अलग गाइड बुक होता है अलग-अलग उसके प्रकाशित करने का अभिप्राय है कि ये सस्ते हों, छोटे हों तथा जिस गैलरी या सेक्शन में दर्शक अधिक रुचि ले उसी का

गाइड बुक वह खरीदें। यह कैटलॉग की तरह विस्तृत विवरण नहीं देता बस एक सामान्य संकेत देता है तथा वीथिका की मूल विशेषताओं को उजागर करता है।

6. हैण्ड-बुक—इसमें पठनीय सामग्री अत्यन्त न्यून होती है। मानचित्रों की संख्या अधिक होती है। वह भी चयनित चित्र या मूर्तियों का चित्र इसमें दिया रहता है। इससे किसी गैलरी के विषय में जानकारी के लिए अधिक समय या श्रम नहीं व्यय करना पड़ता है।

7. कैटलॉग—कोई भी संग्रहालय चाहे वह छोटा हो या बड़ा प्रत्येक संग्रहालय अपना एक कैटलॉग रखता है। इसमें संग्रहालय में उपस्थित सभी छोटी-बड़ी चीजों का उल्लेख रहता है। इसलिए संग्रहालय के आकार-प्रकार के अनुसार कैटलॉग की संख्या एक सेक्शन में कई होती हैं। इसमें सामग्री का विवरण ही प्रधान होता है। उसके विषय में व्यापक विवेचन यहाँ नहीं होता इससे इसका महत्त्व बदल जाता है।

8. पत्र-पत्रिकाएँ—कुछ आदर्श संग्रहालय नियमित पत्रिकाओं का प्रकाशन करते हैं। ये मासिक, त्रैमासिक, षडमासिक आदि होती है। कोई-कोई तो दैनिक पत्र भी निकालते हैं। इसमें संग्रहालय की क्रिया, सामग्रियों, नई खोजों आदि के विषय में लेख भी होते हैं। कुछ अत्यन्त आकर्षक और महत्त्वपूर्ण नवीन उपलब्धियों के चित्र भी होते हैं।

9. वार्षिक प्रतिवदेन—पिछले वर्ष संग्रहालय में क्या क्रियाएँ हुईं? कौन से भाषण हुए? कक्षाएँ चलीं, पर्यटन पर लोग गए, नए प्रदर्श आएँ, नई खोजें हुईं, प्रकाशन हुआ, नुकसान हुआ, दर्शकों की संख्या कितनी रही, विक्रय से आय क्या हुई, व्यय की स्थिति कैसी थी, नई रीतियाँ क्या बनीं आदि पक्षों का विवरण इसमें रहता है तथा भावी योजनाएँ भी रहती हैं। साथ ही कुछ लेख भी होते हैं। पर चूँकि सामान्य जनता की रुचि लेख के अतिरिक्त अन्य बातों में नहीं होती। इसलिए कुछ संग्रहालय इन लेखों को अलग से छापकर बेचते हैं तथा प्रतिवेदन का शेष भाग सरकारी काम काज के लिए होता है।

उपसंहार—यद्यपि संग्रहालयों के शैक्षणिक कार्यक्रमों के महत्त्व की प्रवृत्ति अभी नाम मात्र की ही दिखाई पड़ती है किन्तु निश्चय ही इसमें वृद्धि होगी और शैक्षणिक सेवाओं का महत्त्व बढ़ेगा। आज बहुत से नगरों के बड़े संग्रहालय अपने पुरातत्त्व और कला संग्रह की वृद्धि कर रहे हैं इस सन्दर्भ में यह द्रष्टव्य है कि ये केवल आकार में नहीं बढ़ रहे हैं बल्कि अपना कार्यक्षेत्र भी विस्तृत कर रहे हैं तथा इनके माध्यम से शिक्षा का प्रसार भी हो रहा है। भारतीय पुरातत्त्व और कला के प्रतिनिधि संग्रह को शिक्षोपयोग ढंग से प्रदर्शित करने का बड़ा ही अच्छा उदाहरण राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली में है। वहाँ पर कला में अभिव्यक्त इतिहास और संस्कृति का बड़ा ही सुसम्बद्ध और क्रमिक विवरण प्रस्तुत किया गया है जो शिक्षा के दृष्टि से अत्यन्त प्रभावशाली सिद्ध हुआ। संग्रहालययी शिक्षा की प्रगति में केन्द्र सरकार भी अहम भूमिका निभाती है। उपर्युक्त सन्दर्भ में शिक्षा मंत्रालय के शिक्षा शिविर विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुए। संग्रहालय कर्मचारियों को शोध कार्य में प्रोत्साहित करने के लिए शिक्षा मंत्रालय ने अधिछात्रवृत्तियों की व्यवस्था की है जिसके अन्तर्गत प्रत्येक वर्ष कुछ चुने हुए संग्रहालय व्यवसाय की प्रगति में सरकार का यह सहयोग अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण है। संग्रहालयों की प्रगति के लिए केन्द्रीय सरकार का तीसरा मुख्य साधन है। शिक्षा प्रसार में संग्रहालयों का अधिकाधिक प्रयोग पिछले कुछ वर्षों से संग्रहालय भी इस ओर विशेष ध्यान दे रहे हैं। क्योंकि आज के युग में व्यापक स्तर पर शिक्षा प्रसार ही उनका मुख्य उद्देश्य है। भविष्य में भारतीय संग्रहालयों की शैक्षणिक सेवाओं का स्वरूप और प्रकार अभी स्पष्ट नहीं है। किन्तु यह

निश्चित है कि प्रदर्शनी, जनसम्पर्क, पर्यटन और प्रकाशन के माध्यम से संग्रहालय अपने इस उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल हो सकता है।